M.L.S. College Sarisab-Pahi, Madhubani
(L.N.M.U., Darbhanga)
Department of Philosophy
Dr. SARITA KUSHWAHA

B.A. I[st] (Hon.)
Paper - II[nd]
Paper N. - Modern western Philosophy
Chap. - Descartes (देकार्त)

Rene Descartes (रेने देकार्त) (4)

Attributes of God (ईश्वर के गुण)

देकार्त ने ईश्वर की अवधारणा एक निरपेक्ष द्रव्य के रूप में की है। देकार्त एक ऐसा द्रव्य जो अनन्त, स्वतंत्र, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है तथा जिनसे हम सभी को एवं सभी वस्तुओं को उत्पन्न किया है उसे 'ईश्वर' शब्द से सम्बोधित करते हैं। इस प्रकार ईश्वर का संप्रत्यय एक ऐसी पूर्ण सत्ता की चेतना है, जो प्रत्येक प्रकार की अपूर्णताओं से रहित है। देकार्त के दर्शन में द्रव्य, गुण और पर्याय का विशेष महत्व है। द्रव्य की परिभाषा देते हुए देकार्त कहते हैं कि "द्रव्य वह है जिसका स्वतंत्र आस्तित्व हो और जो अपने चिन्तन व आस्तित्व के लिए किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा न रखता हो।"

देकार्त तत्व-त्रय अर्थात् ईश्वर, चित् और अचित् को सिद्ध करते हैं। ये तीनों तत्व अर्थात् द्रव्य हैं। किन्तु देकार्त के द्रव्य की परिभाषा के अन्तर्गत ये तीनों नहीं आते। देकार्त के अनुसार द्रव्य वह है जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए अन्य वस्तु की अपेक्षा न हो। इस परिभाषा के अनुसार तो ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है, क्योंकि केवल उन्हीं की स्वतंत्र सत्ता है। फिर चित् और अचित् को, जो दोनों अपनी सत्ता के लिए ईश्वर पर आश्रित हैं, द्रव्य कैसे कहा जाता है? देकार्त इसके लिए द्रव्य को दो विभाग में बांट देते हैं -

1. निरपेक्ष या पर द्रव्य (Uncreated or Absolute Substance)
2. सापेक्ष या अपर द्रव्य (Created or Relative Substance)

Scanned with CamScanner

ईश्वर ही एकमात्र स्वतंत्र एवं निरपेक्ष द्रव्य है। चित् और अचित् दोनों सापेक्ष द्रव्य हैं क्योंकि दोनों अपने अस्तित्व के लिए ईश्वर की अपेक्षा रखते हैं। इन दोनों को 'द्रव्य' इसलिए कहा जाता है कि ये दोनों परस्पर-सापेक्ष न होकर ईश्वर-सापेक्ष हैं। चित् और अचित् परस्पर स्वतंत्र हैं यदि वे परतंत्र है तो सिर्फ ईश्वर पर। ईश्वर-परतंत्र होने से उनके 'द्रव्यत्व' की क्षति नहीं होती है। इस प्रकार तीनों द्रव्य सिद्ध हुयें-

एक तो, ईश्वर जो 'पर द्रव्य' (Absolute Substance) हैं;
दूसरा, जीव जो 'चेतन द्रव्य' (Thinking Substance) हैं; और
तीसरा, जड़ जगत् जो 'विस्तृत द्रव्य' (Extended Substance) हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब देकार्त ने द्रव्य को अस्तित्व-स्वातन्त्र्य के माध्यम से परिभाषित किया तो उसे केवल ईश्वर को ही द्रव्य की श्रेणी में रखना चाहिए था। उन्होंने चित् और अचित् को भी द्रव्य की श्रेणी में क्यों रखा? ऐसी बात नहीं है देकार्त को इस समस्या का परिज्ञान नहीं था वास्तव में देकार्त विज्ञान, दर्शन एवं ईसाई धर्म में समन्वय स्थापित करना चाहते थे। ईसाई धर्म ईश्वर, आत्मा और जड़-तत्व में विश्वास करता है। देकार्त के अनुसार द्रव्य (ईश्वर) एक ही हो सकता है। लेकिन देकार्त ईसाई धर्म के विरोध में जाने का साहस नहीं कर सकते थे क्योंकि धर्म का प्रभाव जनमानस में प्रगाढ़ रूप से था। इसी कारण देकार्त ईश्वर, चित् और अचित् की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं। अतः दर्शन एवं धर्म में समन्वय स्थापित करने के कारण उनके दर्शन में यह समस्या उठी।

Scanned with CamScanner

देकार्त के अनुसार प्रत्येक द्रव्य के अन्दर गुण और पर्याय पाए जाते हैं। ईश्वर के अनन्त गुण और पर्याय हैं पर हम ईश्वर के केवल दो ही गुणों चैतन्य और विस्तार को जान सकते हैं क्योंकि वे ही गुण मनुष्य के भीतर पाए जाते हैं। गुण को देकार्त इस प्रकार परिभाषित करते हैं कि "गुण द्रव्य का वह धर्म है जो द्रव्य को नष्ट किये बिना उससे पृथक नहीं किया जा सकता।" चित् का मूल गुण चैतन्य है तथा अचित् का मूल गुण विस्तार है। चैतन्य और विस्तार परस्पर स्वतन्त्र और विलक्षण होने के कारण चित् और अचित् दो स्वतंत्र और विलक्षण द्रव्यों में निवास करते हैं। यही देकार्त का द्वैतवाद (Dualism) है। जिसके कारण उनका दर्शन कई प्रकार के दोषों से ग्रस्त हो जाता है।

देकार्त ने गुणों के साथ पर्यायों का भी वर्णन किया है। पर्याय को परिभाषित करते हुए वे लिखते हैं कि "पर्याय द्रव्य का वह धर्म है जिसका किसी अन्य वस्तु अर्थात् गुण के बिना न तो कोई अस्तित्व हो सकता है और न ही चिन्तन किया जा सकता है।" स्थान (Position), आकृति (figure), और गति (Motion) विस्तार के पर्याय (Modi Extension) हैं क्योंकि बिना विस्तार उनकी कल्पना नहीं की जा सकती। इसी प्रकार भावना (feeling), संकल्प (volition), इच्छा (Desire) और संवेदना (Sensation) चैतन्य के पर्याय हैं। बगैर चैतन्य के इन पर्यायों की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

Savita Kushwaha
16/04/2020

Scanned with CamScanner